UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015 (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. –24-27

''उच्च शिक्षा में जीवन मूल्य–सफल जीवन की आधारशिला''

''एक व्यक्ति बनने की कोशिश सिर्फ कोशिश मात्र है जब तक कि आप मूल्यों पर चलने वाले व्यक्ति न हो''।

"The great hope of society is individual" character and it is based on value only"

सारांश

भारतीय संस्कृति संपूर्ण ब्रम्हाण्ड में अनूकरणीय है। वैश्विकरण इस युग में भारतीय सनातन संस्कृति में सभी विषय एवं अर्न्तविषय समाहित है और इस संस्कृति की जड़े जीवन मूल्यों से जुडी हुई है, जो प्राचीनतम वेदो उपनिषदों एवं ग्रंथो में विद्यमान है। शिक्षा वह है जो व्यक्ति को बंधन मुक्त कर वैचारिक शक्ति प्रदान करती है। उच्च शिक्षा का उददेश्य युवाओं में मानवीय गुणों का विकास कर ऐसे नागरिकों का निर्माण करना है। जो आत्म चिंतन एवं स्वविवेक से राष्ट्र निर्माण में सत्त प्रयत्नशील रहता है। वर्तमान परिस्थितियों में शनैः–शनैः इन जीवनमूल्य/नैतिक मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है, जिसका दुष्परिणाम संपूर्ण समाज के लिये एक यक्ष प्रश्न उपस्थित करता है। प्रस्तुत शोध पत्र उच्च शिक्षा में जीवन मूल्यों की पुर्नस्थापना करने के लिये नीतिगत प्रयासों की विवेचना करना है जिसके आधार पर संयम, सहनशीलता , सहिष्णुता, सौम्यता, सरलता, साहस, दायित्व बोध, वैचारिकता, ईमानदारी, सांमजस्यता, सरलता, आदि जीवन मूल्यों सें व्यक्तित्व विकास हो सके। जीवन मूल्यों को स्थापित करने हेतू विभिन्न विधियॉ एवं उससे संबधित व्यवहारिक समस्याएं क्या हो सकती है, तथा किस प्रकार से उच्च शिक्षा में जीवन मूल्यों का समावेश कर सफल जीवन की आधारशिला रखी जा सकती है, यही इस शोध पत्र का उददेश्य है।

कुंजी शब्द :– संस्कृति, जीवन मूल्य, उच्च शिक्षा, स्वविवेक, सफलता एवं आधारशिला।

प्रस्तावना

संपूर्ण ब्रम्हाण्ड में भारतीय संस्कृति का स्थान सर्वोच्च है क्योंकि यही ऐसी एकमात्र संस्कृति है जो शिक्षा के समानांतर जीवन मूल्यों को सर्वोपरि रखती है जिससे कि हर व्यक्ति एक नेक इंसान बन सके। एक सफल व्यक्ति बनने के लिये सिर्फ उच्च शिक्षा ही पर्याप्त नहीं है वरन ऐसी शिक्षा अनिवार्य है जो मूल्य आधारित हो तथा नीर क्षीर विवेक में सहायक हो। जीवन की प्रारंभिक पाठशाला यानि परिवार की संस्कृति एवं मूल्य मनुष्य के जीवन में गहरी छाप छोड़ते है तथा उसके भविष्य निर्माण में सहायक होते है। भविष्य में यही युवा उच्च पद पर आसीन होकर देश की दशा एवं दिशा तय करेगे। वर्तमान परिदृश्य में उच्च शिक्षा से ये जीवन मूल्य क्रमशः कमतर या लुप्रप्रायः हो चले है अतः आवश्यकता इस बात की है कि हम अपनी युवा पीढ़ी को अच्छी शिक्षा के साथ साथ मूल्य एवं संस्कार भी दे जिससे कि शिक्षा के वास्तविक उद्देश्यों की पूर्ति हो सके और एक स्वस्थ सामाजिक संरचना का बाधारहित विकास हो सके।

शोध पत्र के उद्देश्यः–

प्रस्तुत शोधपत्र निम्न उद्देश्यों पर आधारित है

1. वर्तमान उच्च शिक्षा में जीवन मूल्य की उपयोगिता समझना।
2. जीवन मूल्यों की पुर्नस्थापना हेतू किये जा रहे प्रयासो की विवेचना करना।
3. वर्तमान में उच्च शिक्षा में जीवन मूल्यों को समाहित करने के लिये शिक्षकों की भूमिका

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015 (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. –24-27

4. समस्याएँ तथा जीवन मूल्यों से व्यक्तित्व विकास की राह प्रबल करने हेतू सुझाव प्रदान करना।

शोध प्रविधिः–

प्रस्तुत शोधपत्र द्वितीयक समंको यथा संदर्भग्रंयों, शोधपत्रों, प्रकाशित लेखों एंव अन्य समाचार पत्र–पत्रिकाओं से प्राप्त जानकारी पर आधारित है।

साहित्य समीक्षाः–

ऋग्वेद के अनुसार ***''धियो यो नः प्रचोद्‌यात''*** अर्थात हे प्रभो! हम सबकी बुद्धियों, कर्मों व वाणियों को श्रेष्ठ मार्ग में प्रेरित कीजिये अर्थात मनुष्य की यह अपेक्षा है कि वह सद्‌बुद्धि एवं मूल्यों से परिपूर्ण हो। डॉ. खुमेश सिहं ठाकुर एवं डॉ. जी.एल. मालवीय ने अपने शोधपत्र, **''उच्च शिक्षा के गुणवत्ता विकास में मूल्योन्मुखी शिक्षा की प्रांसगिकता''** (फरवरी 2015) विषय में मूल्य विहीन शिक्षा पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा है कि मूल्योंन्मुखी शिक्षा विकसित व्यक्तित्व प्रदान करती है इसके अभाव में जीवन स्तर विचारणीय हो जायेगा। श्री महेश चन्द शर्मा ने भी अपने लेख **"नैतिक शिक्षा अनिवार्य"** में कहा है कि हमें ऐसी शिक्षा चाहिये जिससे चरित्र बने मानसिक बल बढ़े, एकाग्रता आये एवं बुद्धि का विकास हो। **स्वामी विवेकानंद** ने कहा भी है कि ''अपना व्यक्तित्व, मनुष्यत्व, चरित्र, सुविचार आत्मसात करने वाला एवं क्षमता का विकास करने वाली शिक्षा आवश्यक हैं। शिक्षा से शरीरिक, बौद्धिक व मानसिकता का सर्वागीण विकास होना आवश्यक है।''

उच्च शिक्षा एवं जीवन मूल्य

शिक्षा का अर्थ है सत्य की खोज करना अर्थात हमारे भीतर के ज्ञान को प्रज्जवलित करना। शिक्षा का उद्देश्य सभ्य समाज की स्थापना करना है जिससे कि व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र की उन्नति हो सके। उच्च शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति का समग्र विकास होकर उसे कुशाग्र प्रतिभाशाली, रचनात्मक एवं जागरूक बनाया जा सकता है जिससे कि वह जीवन की हर चुनौती का सामना धैर्य एवं शांति के साथ कर सके।

अब प्रश्न यह उठता है कि उच्च शिक्षा कैसी हो ? ऐसी शिक्षा जिसमें वसुधैव कुटुम्बकम, आदर, सम्मान, राष्ट्रीयता, सहिष्णुता एवं प्रेम की भावना का समावेश ना हो वो किस काम की ? शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति का चरित्र निर्माण भी है अतः हमे ऐसी शिक्षा प्रणाली चाहिये जो जुनून, पूर्वाग्रह एवं बुराईयो से दूर हो।

जीवन मूल्य की उपयोगिता

वर्तमान भौतिक एवं वैश्वीकरण के युग में जहॉ हम चहुँमुखी प्रगति कर रहे है वही अपनी सांस्कृतिक जड़ो से दूर होते जा रहे। समय की कमी, नौकरी की विवशता एवं करियर निर्माण के चलते हम कही चरित्र निर्माण की उपेक्षा कर रहे है। आज विचारों में समानता सिर्फ दिखावे भर या उददेश्य मात्र की प्रप्ति के लिये है। अलगाव वाद अपनी चरम सीमा पर है। गाँधीजी के **'वैष्णव जनतो तेने कहियत'** जैसे भजन पर विचार ही नहीं है। सांध्य आरती, मंगलाचरण, सामूहिक प्रार्थना, चरण स्पर्श जैसे विचार जो ना केवल धार्मिक है अपितु विज्ञान आधारित भी है अपना मर्म खोते जा रहे है। अपनी संस्कृति की पुर्नस्थापना के लिये, व्यक्ति के सर्वागीण विकास के लिये चरित्र निर्माण के लिये हमें जीवन मूल्यों की आवश्यकता हैं। बच्चों में प्रेम एवं सहयोग के वातावरण का निर्माण करने के लिये, आगे बढ़ने को प्रेरित करने हेतू, स्वस्थ प्रतिस्पर्धा विकसित करने के लिये, अनुशासिंत जीवन जीने के लिये जीवन मूल्य आवश्यक है।

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015 (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. –24-27

उच्च शिक्षा की वर्तमान स्थिति

18–23 वर्ष आयु समूह मे उच्च शिक्षा के लिये नामांकित विद्यार्थियों का सकल नामांकन अनुपात (उसी आयु समूह के योग्य विद्यार्थियों) में सन् 2014–15 में 23.5 प्रतिशत था जबकि सन् 2012–13 में 21.5 प्रतिशत था अर्थात उच्च शिक्षों में नामांकन का प्रतिशत सन् 2012–13 से सन् 2014–15 तक 2 प्रतिशत से बढ़ा है। हमारे देश में वर्तमान में 757 से अधिक विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा में अपना योगदान दे रहे है जिसमें निजी, राज्य, डीम्ड एवं केन्द्रीय विश्वविद्यालय सम्मिलित है जिसके अर्न्तगत 3 करोड़ 33 लाख छात्र छात्राएं नामांकित है । म.प्र. में शासकीय एचं निजी महाविद्यालय कार्यरत है। इसके अतिरिक्त भारतीय प्रबंधन संस्थान भी उच्च शिक्षा के इस महान यज्ञ में अपनी आहूति दे रहे है।

वर्तमान में भारतीय उच्च शिक्षा संस्थानो के अलावा अन्य विदेशी संस्थानो से भी भारतीय उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे है। विश्वविद्यालयो की भूमिका ज्ञान के संवाहक के रूप में है जो ज्ञान के नित नमे आयाम खोज कर ज्ञान प्रदान करने वाले मनुष्यों की पौध तैयार करना है जिससे यह अविरत्म यात्रा चलती रहे।

जीवन मूल्यों का शिक्षा में समावेश कर हम उस समाज की परिकल्पना कर सकते है जिसमें हर वर्ग को अपने नैतिक दायित्व का बोध हो। इस प्रकार की शिक्षा में सीखाने की प्रक्रिया के स्थान पर सीखने की प्रक्रिया पर बल दिया जाता है। हमें शिक्षा के क्षेत्र में ऐसे वातावरण का निर्माण करने की जरूरत है जिसमें यह मूल्य व्यवहार में अंग्रीकृत होकर परिलक्षित हो सके।

सफल व्यक्तित्व हेतू जीवन मूल्यों में हम निम्न को समाहित कर सकते है।

1. ईमानदारी
2. स्वविश्वास/ विश्वास
3. पद
4. प्रतिष्ठा
5. दृढ़ निश्चय
6. लगन
7. नम्रता
8. दयालुता
9. परोपकार
10. नैतिकता
11. आदर
12. धीरज
13. आरोग्य
14. सौम्यता
15. शक्ति
16. जिज्ञासा
17. स्वअनुशासन/अनुशासन
18. मितव्ययिता
19. सांसारिकता
20. अंगीकरण
21. स्वावलंबन
22. आध्यात्मवाद
23. विजय
24. सफलता
25. प्रकृति के प्रति प्रेम
26. सत्यता
27. राष्ट्रीयता
28. समानता
29. उदारता
30. न्यायप्रियता
31. देशप्रेम

यदि उपरोक्त मूल्यों को हम श्रेणीबद्ध करे तो निम्न तालिका हमारे लिये सहायक होगी.

जीवन मूल्य

↓

व्यक्तिगत/ व्यक्तिक | **सामाजिक** | **नैतिक** | **आध्यात्मिक** | **व्यव्हारिक**

जीवन मूल्यों को व्यक्तित्व में परिलक्षित करने हेतू हम निम्नलिखित पद्धति को आधार स्तंभ बना सकते है।

1. **समागम / अंतिर्नवेशन -** इसके अर्न्तगत सामाजिक एवं व्यक्तिगत मूल्यों का समावेश किया जाता है जिससे व्यक्ति को अपने आतंरिक गुणों में परिपक्व किया जा सकता है।

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015 (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. –24-27

2. **नैतिक विकास -** नैतिक विकास की प्रक्रिया में सोच को महत्व दिया जाता है जिसके अर्न्तगत पूर्व पंरपरागत, परंपरागत एवं उत्तर पंरपरागत/ स्वायत्त/ सैद्धांतिक प्रक्रिया के तहत विकास पर बल दिया जाता है। प्रथम चरण के द्वारा आज्ञा एवं अनुशासन तत्पश्चात शनैः–शनैः सिद्धान्त, आपसी समझ एवं विचार, अधिकार एवं दायित्व बोध, सामाजिक संरचना एवं अंत में संपूर्ण मूल्य सिद्धान्तों की शिक्षा को समाहित किया जाता है।
3. **विश्लेषण-** यह पद्धति व्यवहारिक सोच एवं तर्कशक्ति को बढ़ावा देती है जिससे विद्यार्थियों में विश्लेषण एवं तार्किक सोच को बढ़ावा मिलता है। बौद्धिक प्रक्रिया के आधार पर विश्लेषण कर हित, अहित समागम या फिर नकारात्मकता का निर्णय लिया जा सकता है।
4. **मूल्यों की प्रतिस्थपना -**इसके अर्न्तगत हर व्यक्ति अपनी सोच, भावनाओं, इच्छा, स्वजागरूकता, स्वनिर्णय जैसे मूल्यों को बढ़ावा देकर प्रतिस्थापना की पहल की जाती है। हर व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता के आधार पर विभिन्न विकल्पों में से किसी सर्वश्रेष्ठ विकल्प का चयन परिस्थिति अनुसार कर सकता है जिसमें सबका हित सम्मिलित हो।
5. **क्रियात्मक अधिगम (एक्शन लर्निग)-** यह प्रक्रिया इस बात पर जोर देती है कि हर व्यक्ति अपनी पारिवारिक एवं सामाजिक पृष्ठभूमि से प्रेरित होता है व्यक्ति स्वंय से प्रेरित होकर आत्मस्फूर्ति कर आगे बढ़ता है। इस प्रक्रिया में विश्लेषण एवं चयन की महत्वपूर्ण भूमिका है जिसमें पुर्नविचार की सोच को समाहित किया गया है।

जीवन मूल्यों की पुर्नस्थापना हेतू किये जा रहे प्रयास एवं शिक्षकों की भूमिका

भारतीय संस्कृति विश्व की अनुपम धरोहर है। उदारवादिता, पाश्चात्यीकरण एवं विचारों में असमांजस्यता आदि ऐसे अनेक कारण है जो जीवन मूल्यों को हमसे दूर करते जा रहे है। इसीलिये उच्च शिक्षा विभाग, यूजीसी, विश्वविद्यालयों में इसके लिये विभिन्न पाठ्यक्रमों का समावेश किया जा रहा है। विद्यार्थियों मे समन्वय, टीम भावना, सहयोग आदि के लिये कौशल विकास के पाठ्यक्रमों पर जोर दिया जा रहा है। भारतीय शिक्षा के संदर्भ में राधाकृष्ण कमीशन 1948, श्री प्रकाश कमेटी ऑन रिलिजियस एण्ड मोरल इन्सट्रक्शन्स 1959, कोठारी कमीशन 1964–66 नेशनल पॉलिसी ऑन एज्यूकेशन 1986, एवं 1992 राममूर्ति कमेटी 1990, प्रोग्राम ऑफ एक्शन 1992 आदि ने अपनी शैक्षणिक रिपोर्ट में मूल्यों एवं नैतिक शिक्षा को महत्वपूर्ण माना है।

वर्तमान वैश्विक युग में विद्यार्थियों के सर्वागीण विकास हेतू शिक्षकों की भूमिका में दिन प्रतिदिन परिवर्तन परिलक्षित हो रहे हैं जहॉ एक ओर उन्हें विषय विशेष का ज्ञान देना है वही दूसरी ओर उन्हें विद्यार्थियों को सामाजिकता, नैतिक दायित्व, औद्योगिक समझ, कला कौशल, भाषा विकास एवं व्यक्तित्व विकास का पाठ भी पढ़ाना है। यही वजह है कि वर्तमान में उच्च शिक्षा में नित् नये प्रयोग किया जा रहे है। केस स्टडी, प्रोजक्ट, ऑन जॉब ट्रेनिंग, शैक्षणिक भ्रमण, परिस्थिति विश्लेषण, रोल प्ले, सामूहिक चर्चा, एन.सी.सी., एन.एस.एस. गतिविधियॉ, पाठयक्रम का अनिवार्य अंग बनती जा रही है। इसके साथ ही प्रेरणादायी व्यक्ति विशेष के जीवन का विश्लेषण कर ईमानदारी, समन्वय, दूरदर्शिता, गहन निरीक्षण, काम के प्रति समर्पण आदि गुणों के बारे में बताया जा रहा है। साथ ही साथ प्रत्येक शिक्षक अपने विद्याथियों के उत्थान के लिये सदैव सचेत एवं प्रयासरत है। साथ ही साथ योग, व्यायाम, मेडिटेशन, संगीत, कला अभिव्यक्ति जैसी रूचियों को बढ़ावा देकर विद्यार्थियों में धैर्य, लगन, शान्ति, चित्त की एकाग्रता जैसे मूल्यों की प्रति स्थापना के प्रयास किये जा रहे है। इसके अलावा स्टूडेन्ट एक्सचेंज प्रोग्राम्स के तहत देश की सांस्कृतिक विरासत को अन्य देशों तक पहुॅचाने में शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका है।

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015 (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. –24-27

समस्याएंः व्यक्तिगत रूप से यदि देखा जाये तो जीवन मूल्यों की पुर्न स्थापना के लिये वर्तमान विद्यार्थियों के साथ कुछ समस्याओ का सामना करना पड़ता है जैसे

- विश्लेषण की क्षमता अधिक होने पर हर परिस्थिति एव मूल्यों का विश्लेषण करना।
- वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता की जॉच करना।
- तर्क वितर्क करना।
- परिस्थिति अनुसार बदलाव के लिये हरदम तैयार ना रहना।
- कुछ वर्ग विशेष का केवल 'स्व' संबंधी विषयों पर रूचि लेना।
- धैर्य एवं संयम का अभाव।
- विषय विशेष अर्थात पाठ्यक्रम के अलावा बताई जाने वाली बातें एवं व्यवहार पर ध्यान ना देना।
- परंपरागत कोर्सेस में उपस्थिति कम होना।
- उच्च शिक्षा संस्थानों का निजीकरण।
- अनुशासन हीनता का पाया जाना।
- नैतिकता का अभाव होने से चारित्रिक पतन होना।
- केवल डिग्री प्राप्रि ही शिक्षा का अंतिम उद्देश्य।
- कतिपय शिक्षकों में भी धैर्य एवं संयम का अभाव पाया जाना।

सुझाव

किसी भी व्यक्ति की असफलता यह सिद्ध करती है कि सफलता के लिये पूरे मन से प्रयास नहीं किये गये। वर्तमान प्रतिस्पर्धी युग में एक सफल व्यक्ति वही है जो मूल्यों में विश्वास रखता हो सकारात्मक सोच रखता हो तथा जिसने संयम एव विवेक रूपी अस्त्र को धारण किया हो। सफल व्यक्तित्व की आधार शिला हेतू हम निम्न सुझावों को अपना सकते है।

1. संस्था स्तर के वातावरण/परिदृश्य को ध्यान में रखकर शिक्षा की नीति तय करना।
2. शिक्षकों का अभिमुखीकरण अनिवार्य हो जिससे उनमें टीम भावना धैर्य एवं संयम बढ़ सके।
3. सामूहिक गतिविधियों का संचालन ज्यादा से ज्यादा किया जाना।
4. एन.एस.एस, एन.सी.सी. जैसी गतिविधियों को पूर्णतः अनिवार्य किया जाना चाहिये।
5. योगाभ्यास मेडिटेशन एवं खेलकूद से संबधित छोटे छोटे पाठ्यक्रमों का समावेश किया जाना चाहिये।
6. सामाजिक सरोकरों में भाग लेने वाले विद्यार्थियों को विशेष ग्रेड दिया जाना चाहिये।
7. समाज के विकास, नगर के विकास एवं देश के विकास की भावना रखने वाले युवाओं को अभिप्रेरित किया जाना चाहिये।
8. जीवन की यथार्थता से परिचित करवाने के लिये प्रेरणा पुरूषों की विचार श्रृंखलाएँ आयोजित करवाना।
9. शिक्षकों के पढ़ाने की पद्धति वातावरण एवं विद्यार्थियों के झुकाव के अनुसार बदली जा सकती है अर्थात मनोवैज्ञानिक कारणों को ध्यान में रखा जाये।
10. शिक्षकों के कार्य निष्पादन जॉच में इन मूल्यों को ध्यान में रखा जायें।
11. आधारभूत मल्यों एवं नैतिक शिक्षा पर समाज को जोड़ने वाले शिक्षकों को चिन्हित कर सम्मानित करने की योजना होनी चाहिये।

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015 (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. –24-27

12. व्यक्तित्व विकास एवं संप्रेषण प्रक्रिया में हर वर्ग के विद्यार्थियों को सम्मिलित करना एवं उनके आत्म विश्वास में वृद्धि करने हेतू समाज के विभिन्न वर्गो से परिचर्चाएँ आयोजित करना।

उपरोक्त सुझाव विद्यार्थियों के सफल जीवन एवं व्यक्तित्व के लिये आधारस्तंभ् सिद्ध हो सकते है। नैतिक एवं जीवन मूल्यों से परिपूर्ण मनुष्य के लिये जीवन में कण–कण में अवसर विद्यमान है जिनका लाभ उठाकर वह स्वंय एवं देश का उत्थान कर सकता है।

निष्कर्ष

विद्यार्थी जीवन को गीली मिट्टी की संज्ञा प्रदान की जाती है और कहा भी जाता है कि उसका सदुपयोग करने का संपूर्ण दायित्व शिक्षक का है। उच्चा शिक्षा के क्षेत्र में यह और भी प्रासंगिक हो जाता है क्योंकि इस समय यह विद्यार्थी रूपी मिट्टी कुछ अधूरा आकार पाकर पूर्णता की अपेक्षा रखती है। जिन विद्यार्थियों में संस्कार एवं मूल्य विद्यमान् है तथा जिनमें इसकी कमी है उसे पूर्ण एवं तराश कर शिक्षक सामाजिक दायित्वों का निर्वहन करते है चाणक्य का यह कथन कि, ***''शिक्षक की गोद में प्रलय एवं निर्माण दोनों ही पलते है।''*** सार्थक प्रतीत होता है क्योंकि मूल्यों की स्थापना करने हेतू स्वंय शिक्षकों को योग्य एवं कुशल बनना पड़ता है। ऐसे प्रयास मात्र से ही वे महान गुरू श्रीकृष्ण, चाणक्य प्लेटो, अरस्तू, स्वामी विवेकानंदजी, रामकृष्ण परमहंस, रवीन्द्रनाथ टैगोर की शिक्षा के कुछ अंश को चरितार्थ कर सकेगे। स्वंय स्वामी विवेकानंदजी ने कहा है कि, ***शिक्षा का अंतिम उद्देश्य जीवन निर्माण, चरित्र निर्माण एवं संपूर्ण मानव का निर्माण है जिससे कि सृष्टि अपनी रचना पर गर्व कर सके***।

संदर्भ

1. डॉ. खुमेश सिंह ठाकुर/डॉ. जी.एल. मालवीय – उच्च शिक्षा के गुणवत्ता विकास में मूल्योन्मुखी शिक्षा की प्रासंगिकता फरवरी 2015
2. ऋग्वेद्भाष्यम् (प्रथमो भागः) पं हरिशरण सिद्धान्तालंकड•र
3. महेश चन्द्र शर्मा – नैतिक शिक्षा अनिवार्य हो (चंहम 41.44) शिक्षा उत्थान
4. P. Sadgopan – Life Skills and Value Education
   - Annual Report – Ministry of HRD – GOI
   - National Education Policy – 1986
   - National Education Policy – 1992
5. Shamin Mohd. – Importance of value based education (Golden Lecture Series, UGC)